2019-20

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 (2018) July To September 2019, Vol. II

कामकाजी महिलाए वर्तमान परिपेक्ष्य में

कृष्णा शर्मा *

प्रस्तावना - आज सभी छोटे-बड़े शहरों और महानगरों में रहने वाली महिलाओं का 50 से 60 प्रतिशत भाग किसी न किसी नौकरी से जुड़ा हुआ है। प्रत्येक कामकाजी नौकरी पेशा महिला अपने समय का बड़ा भाग दफ्तर या कारखाने में तमाम पुरूष सहकर्मियों के बीच में व्यतीत कर रही है। कामकाजी महिलाएँ जो इस भागदौड़ भरी जिंदगी में घर व दफ्तर दोनों को संभाल रही है। जिससे कामकाजी महिलाओं में मानसिक तनाव की तीव्रता अधिक होती जा रही है। कारण साफ है दोहरी जिम्मेदारियों का वहन करना। वे अपने मन पर हमेशा एक न एक बोझ ढोती रहती है। यदि कार्यालय या स्कूल जाना है, तो सुबह घर से बाहर पैर निकालने से पूर्व उन्हें पति,बच्चों व अन्य सदस्यों की भी जिम्मेदारी पूरा करना पड़ता है। समय से काम पर पहुँचना,घर गृहस्थी में भी कहीं दरार न आने देना,कुशल गृहणी का कर्तव्य पालन करते हुए अतिरिक्त धन राशि घर में लाना,कार्यालय में भी अपने कार्य को पुरूषों के समान ही सक्षमता से कर पाने के बाद भी कामकाजी महिलाओं को देर से पहुँचने पर कई प्रश्नों का सामना करना पडता है।

भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के चलते महिलाओं में तनाव की समस्या एक महत्वपूर्ण पहलू हो गया है। पारंपरिक रूप से भारतीय महिलाएँ पारिवारिक व्यवस्था के अंदर रहकर ही कार्य करती थी। आजकल वे पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर संगठनों में कार्यरत है।

आर्थिक अनिवार्यताओं के चलते हमारे समाज में कई महिलाएँ नौकरी करती है, जो महिलाएँ अपनी रूचि का कार्य करती है, उन्हें अपनी उपलब्धि की कीमत मिलती है, अपना कैरियर बनाने के साथ-साथ गृहस्थी पर भी विशेष ध्यान देना जरूरी होता है। हमेशा महिलाओं को अपनी पांरपरिक भूमिका में अलग से कोई सहायता नहीं मिलती यद्यपि महिलाओं के दायित्व बढ़ गए है क्योंकि सब के लिए यह सम्भव नहीं होता कि वे जितना समय नौकरी में देती है, उतना उन्हें घरेलू कार्यो जैसे झाडना,बुहारना,भोजन पकाना,कपडों को प्रेस करना, बच्चों की शिक्षा आदि के लिए नहीं दे पाती जिसकी वजह से कई बार यह परिस्थितियाँ महिलाओं के लिये घर में कलह उत्पन्न करती है। इन परिस्थितियों से सामंजस्य न कर पाने के कारण कामकाजी महिलाओं के सामने कई कठिनाईयां उत्पन्न होती है।

महिलाएँ प्राकृतिक रूप से अधिक कोमल, भावना प्रधान तथा संवेदनशील होती है। यही कारण है कि वे छोटी-छोटी घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रहती जिसकी वजह से उनके जीवन में कई समस्याएं आती है।

कामकाजी महिलाओं में मानसिक तनाव की तीव्रता अधिक होती है। स्वतंत्र भारत के गत सत्तर वर्षो में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, उन सब का प्रभाव हमारे पारिवारिक जीवन पर पडा है। यह सत्य है कि देश के पिछले सत्तर वर्षो में शिक्षा ,चिकित्सा, यातायात, कृषि,औद्योगिक विकास,दूर संचार,कला,तकनीकी क्षेत्रों में जो प्रगति की है, उसे देख कर लगता है कि भारत विश्व की एक शक्ति बन गया है।

जहां तक सामाजिक जीवन में परिवर्तन का संबंध है,उसमें भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है। लोगों का जीवन स्तर बढ़ा है और मानसिक सोच में बड़ा भारी अंतर आया है। खान-पान ,पहनावा और जीवन-शैली बदली है।

आज वर्तमान में हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने देश को आगे बढ़ाया है उनकी विकास योजनाओं द्वारा देश की 75 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या को भी प्रगति की हवा लगने लगी। इन सब का परिणाम यह हुआ कि देश में औद्योगिक नगरों का विकास हुआ। नई-नई औद्योगिक बस्तियां बनी। भिलाई,दुर्गापुर,राउरकेला,कानपुर,राजपुरा,नौएडा,लुधियाना आदि नए औद्योगिक केंद्र बने।परिणामस्वरूप देश में मुद्रास्फीति बढी। रूपए की क्रय शक्ति कम हुई। देश में परिवर्तन के फलरूवरूप

1. रहन-सहन का स्तर बढ़ गया। अपने इस स्तर को बनाए रखने और उन्नति की नई ऊंचाइयों को छूने की चाह प्रत्येक व्यक्ति में बढी। महिलाएं भी इससे अछूती न रहीं।
2. आरामदायक और विलासिता पूर्ण आवश्यकताएं बढ़ी। रेडियो, फ्रिज, टी.वी,स्कूटर,एस.सी. जैसी वस्तुएं प्रतिष्ठा बन गईं।
3. अच्छे अग्रेंजी स्कूलों के प्रति लोगों का उत्साह बढा और शिक्षा पर लोग अधिक पैसा खर्च करने लगे। इस प्रतियोगिता में हर व्यक्ति शामिल होने लगा।
4. स्त्री शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा। स्त्रियां भी पढ़- लिखकर नौकरियां करने लगी। कामकाजी महिलाओं का एक नया वर्ग बन गया। महानगरों में इनकी संख्या बढ़ने के साथ-साथ छोटे शहरों और कस्बों में भी अनकी संख्या बढ़ने लगी। जिस समाज में स्त्री की कमाई को अनुचित समझा जाता था,उस समाज में स्त्री का कमाई से घर चलने लगे,और दोनों कमाते है। यह बहुत गर्व की बात समझी जाने लगी।
5. पश्चिम का भारतीय जन जीवन पर बहुत प्रभाव पडा। पश्चिम में स्त्रियां पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। शिक्षा और वैज्ञानिक प्रगति के इतिहास में वहां स्त्रियों का बड़ा योगदान रहा है। उन्हीं की प्रेरणा भारतीय स्त्रियों को मिली और वे बड़े आत्मविश्वास के साथ इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने की सोचने लगी। उनकी इस सोच और इच्छा को इन देशों से आए प्रतिनिधिमंडलों,शिष्टमंडलों ने बड़ा प्रभवित किया और स्त्रियों में अपने अधिकारों के प्रति इस प्रकार की जागरूकता को राजनैतिक स्तर पर भी प्रोत्साहित किया गया। इंदिरा गांधी,तारकेश्वरी सिन्हा,अम्बिका सोनी,अरूणा असाफ अली सुषमा स्वराज ,बचेन्द्री पाल,किरण बेदी,अरूणिमा सिन्हा,पी.वी.सिन्धु

*सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान) शास. श्या. सुं. ना. मु. महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत

आदि ने महिलाओं में एक नई सोच पैदा की।

6. शिक्षा,चिकित्सा,समाज सेवा फैशन,सामुदायिक विकास ,पुलिस,सेना आदि में स्त्रियों की मांग बढ़ी और वे दफ़्तरों, होटलों,समाचार पत्रों, न्याय, पुलिस, सेना अन्य संस्थानों तथा प्रयोगशालाओं में काम करने लगी।

वास्तव में उनकी मौलिक प्रतिभा ने उन्हें इन क्षेत्रों में और भी अधिक सफलता दिलाई और कुछ ही वर्षो में स्त्रियों की संख्या लाखों में हो गई। टाइपिंग पर तो जैसे स्त्रियों का एकाधिकार ही हो गया। वर्तमान में कम्प्यूटर पर भी स्त्रियों का अधिकार जम गया।

इन सब का परिणाम यह हुआ है कि देश में आज कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग एक करोड़ हो गई है। कृषि और निमार्ण कार्यो में तो पहले से ही महिलाएं सक्रिय हुआ करती थी,लेकिन अब उनका कार्य क्षेत्र और भी विस्तृत हो गया है। अब कोई ऐसा क्षेत्र नहीं बचा जहां महिलाएं कुशलता से अपने दायित्वों को न निभा पा रही हो। यहां तक कि सुरक्षा जैसे क्षेत्र में भी महिलाएं अपने दायित्वों को कुशलता से निभा रही है।

शिक्षित स्त्रियों के लिए विवाह और नौकरी – भारत में ,विशेषकर आज के शहरी समाज में, शिक्षित स्त्रियों के लिए शादी और नौकरी का सवाल समाजशास्त्रियों के लिए एक दिलचस्प और महत्वपूर्ण विषय बन गया है। स्त्रियों का घरों से बाहर निकलकर काम करने की घटना कोई नई बात नही है,क्योंकि गांवों में स्त्रियां हमेशा से ही जीविका के लिए अपने पुरूष वर्ग के साथ खेतों में काम करती आ रही है। शहरों में भी लम्बे अर्से से स्त्रियां फैक्टियों और गृहनिमार्ण कार्यो में मजदूरी करती आ रही है। परंतु मध्य और उच्च वर्ग की शिक्षित स्त्रियों को घरों से बाहर उपयोगी नौकरियों की तलाश में निकालना अपेक्षाकृत नई बात थी सामाजिक,राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन हो रहे है,यह उसी का परिणाम है और उसी वजह से ये और इसी वजह से इसमें तेजी आई है।

पहले परम्परागत भारतीय समाज में मध्य और उच्च वर्ग भी स्त्रियों का विशेषकर विवाहित स्त्रियों का घरों से बाहर नौकरी करना सम्मानजनक नहीं समझा जाता था। आर्थिक आवश्यकता तथा कठिनाइयों में ही इन वर्गो की स्त्रियों ने घरों के बाहर निकलकर नौकरियां करनी शुरू कीं। आज की बदलती हुई सामाजिक और आर्थिक तथा राजनैतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में तथाकथित सम्मान का विचार अर्थहीन हो गया है। आज विवाहित स्त्रियों द्वारा नौकरी करने को प्राय: अपमानजनक नहीं माना जाता है। आजकल पत्नियों द्वारा नौकरी करने को समाज आपत्तिजनक नही मानता है। यहां तक कि बड़े-बूढ़े भी यह चाहने लगे है कि उनकी बहुएं परिवार की आमदानी में योगदान करें। आज तक बेटियों को उच्च शिक्षा हेतु माता-पिता हर संभव प्रयास कर रहें है।

आज केवल आर्थिक लाभ की वजह से स्त्रियां नौकरी नहीं करती है, बल्कि उसके पीछे अन्य दूसरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण भी है जैसे अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना अपने लिए उच्च दर्जा प्राप्त करना,आर्थिक रूप से स्वावलम्बी होना,दूसरे लोगों से मिलने जुलने की स्वतंत्रता प्राप्त करना,घर को चारदीवारी के ऊबाने वाले वातावरण से राहत पाना,समाज के लाभार्थ काम करना,अपने विशेष व्यवसाय के प्रति मोह,अपना मनचाहा पेशा अख्तियार करने की भावना की पूर्ति आदि।

शिक्षित विवाहित स्त्री द्वारा नौकरी करने की लहर आई है उसका उसके संपूर्ण व्यक्तित्व पर तथा उसके दाम्पत्य जीवन तथा पारिवारिक संबंधों पर असर पडना लाजमी है। अब उसे एक ओर गृहणी व दूसरी ओर जीविकोपार्जन, दोनों की भूमिका निभानी पडती है।

इस प्रकार की भूमिका को निभाने में उसकी शक्ति और समय खर्च होता है और प्राय: इस दोहरी भूमिका की परस्पर विरोधी आवश्यकताओं के बीच जूझना पडता है। और यही एक कामकाजी महिला की पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अब तक तेरे यही कहानी सोमाद्री शर्मा
2. नेशनल कमीशन फार वूमन
3. मिनिस्ट्रि आफॅ वूमन एंड चाईल्ड डेवलपमेंट

****